''उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया''

(19:1-42)

सबसे बड़ी प्रेम कहानी कौन सी है ? कुछ लोगों को सिंडरेला, स्लीपिंग ब्यूटी, या स्नो व्हाइट की परी कहानी अच्छी लग सकती है। इनमें से प्रत्येक कहानी में एक सुन्दर, दयालु लड़की दिखाई गई है जिसे उसका सुशील राजकुमार बचा लेता है और ''इसके बाद वे खुशी-खुशी'' रहने लगते हैं। शायद आपका ध्यान *लैला-मजनूं* या *हीर-रांझा* जैसी वयस्क प्रेम कहानियों की ओर भी जा रहा होगा।

प्रेम कहानियों पर विचार करते हुए, शायद आप किसी बच्चे के प्रति माता-पिता के प्रेम पर भी विचार कर सकते हैं। कोरिया की एक किसान मां की कहानी है जो अपने नवजात पुत्र के साथ सर्दी के मौसम में तूफ़ान में फंस गई थी। अपने छोटे से बच्चे को सर्दी से बचाने का भरसक प्रयास करते हुए, उसने अपने मोटे गर्म कपड़े उतारकर बच्चे को उनमें लपेट दिया। अगली सुबह, उस औरत की बर्फ में जम चुकी लाश मिली, और उसके पास पड़े कपड़ों के गट्ठे से उसके बेटे के रोने की आवाज सुनाई दी जो पूरी तरह सुरक्षित और गर्म था। बड़ा होने पर, वह अक्सर अपनी मां के प्रेम और बलिदान की बात बताता था। सर्दी के मौसम में एक बहुत ही ठण्डे दिन उसे बिना कोट या कमीज़ के अपनी मां की कब्र पर देखा गया था। वह पूछता जा रहा था, ''मां, क्या तुझे मेरी खातिर इतनी ठण्ड लगी थी ?''

इस तरह की कहानियां प्रेम की बड़ी अभिव्यक्ति के रूप में हमारे मनों पर काफी असर डालती हैं। पर, संसार की सबसे बड़ी प्रेम कहानी निश्चय ही यूहन्ना 19 अध्याय में मिलती है। यह कहानी बताती है कि परमेश्वर हमसे कितना प्रेम करता है; यह कहानी क्रूस की है।

क्रूस एक प्रेम कहानी के रुप में

क्रूस की कहानी को प्रेम कहानी कहना कोई नई बात नहीं है। बहुत बार यूहन्ना ने संकेत दिया कि क्रूस परमेश्वर के प्रेम का चरम था:

> क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे

> दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए (3:16)।
>
> फसह के पर्व से पहले जब यीशु ने जान लिया, कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊं, तो अपने लोगों से जो जगत में थे, जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा (13:1)।
>
> मेरी आज्ञा यह है, कि जैसे मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे (15:12,13)।

क्रूस पर बहुत सी व्याख्याएं दी जा सकती हैं। यूहन्ना रचित सुसमाचार में जिस व्याख्या पर ज़ोर दिया गया है वह यह है कि क्रूस परमेश्वर के प्रेम का चरम प्रदर्शन था।

यीशु को हन्ना, कायफा और पीलातुस के सामने पेश करने के बाद क्रूस पर चढ़ाने के लिए यहूदियों को सौंप दिया गया था। बेशक क्रूस मसीही विश्वास का कोने का पत्थर है, परन्तु वास्तविक घटना को कुछ ही शब्दों में दर्ज किया गया।

> तब वे यीशु को ले गए। और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो खोपड़ी का स्थान कहलाता है। और इब्रानी में गुलगुता। वहां उन्होंने उसे और उसके साथ और दो मनुष्यों को क्रूस पर चढ़ाया, एक को इधर और एक को उधर, और बीच में यीशु को (19:17,18)।

वास्तव में, सुसमाचार के चारों लेखकों में से किसी ने भी यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने का विस्तार से वर्णन नहीं किया। ''उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया'' वे साधारण से शब्द हैं जिनमें बहुत गहरा अर्थ है। जो कोई विश्वास करता है (यह शब्द वहां फिर मिलता है!) कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, वह बिना प्रभावित हुए इसे नहीं पढ़ सकता। यूहन्ना की बात में कि ''उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया'' बहुत बड़ी शक्ति है।

फिर, यूहन्ना ने बताया कि पीलातुस ने आज्ञा दी कि यीशु के सिर पर एक चिह्न रखा जाए। इसमें लिखा जाए, **''यीशु नासरी यहूदियों का राजा'' (19:19)**। यह अद्भुत वाक्य इब्रानी (यहूदियों की भाषा), लातीनी (रोमियों की भाषा) और यूनानी (उस समय की प्रचलित व्यापारिक भाषा) में लिखा गया है। निःसंदेह जो यीशु की मृत्यु के ज़िम्मेदार थे महायाजकों के लिए यह ठोकर का कारण था। वे इस पर लिखना चाहते थे कि ''उसने कहा, मैं यहूदियों का राजा हूं।'' पीलातुस ने, उसकी सामर्थ या उस ठोकर के कारण की परवाह किए बिना कहा, ''मैं ने जो लिख दिया, वह लिख दिया'' (19:22)।

यूहन्ना रचित सुसमाचार में क्रूस पर लगाई गई पट्टी किसी व्यक्ति का एक और उदाहरण है जिसमें वह बात कही गई है जिसे वह जानता ही नहीं था। ऐसा पहले हमने उस

समय देखा था जब कायफा ने यहूदी सभा को बताया था, ''तुम कुछ नहीं जानते। और न यह सोचते हो, कि तुम्हारे लिए यह भला है, कि हमारे लोगों के लिए एक मनुष्य मरे, और न यह, कि सारी जाति नाश हो'' (11:49, 50)। यूहन्ना ने आगे स्पष्ट किया:

> यह बात उस ने अपनी ओर से न कही, परन्तु उस वर्ष का महायाजक होकर भविष्यवाणी की, कि यीशु उस जाति के लिए मरेगा। और न केवल उस जाति के लिए, बरन इसलिए भी, कि परमेश्वर की तितर-बितर सन्तानों को एक कर दे (11:51, 52)।

इसी तरह, पीलातुस ने एक बहुत बड़ी सच्चाई उगल दी जिसके महत्व का उसे क्रूस पर पट्टी लगाने का आदेश देने के समय अनुमान नहीं था।

यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के आदेश का पालन करने वाले सिपाहियों ने रोंगटे खड़े करने वाला परन्तु उबाऊ काम करना था। एक बार एक व्यक्ति को क्रूस पर चढ़ाने और उस क्रूस को ऊंचा खड़ा करने के बाद, उनके लिए खड़े होकर उस व्यक्ति के मरने की प्रतीक्षा करने के अलावा कोई और काम नहीं होता था। समय बिताने और कुछ अतिरिक्त धन कमाने के लिए, वे क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले व्यक्ति के कपड़े बांट लेते थे। यीशु के कपड़े भी उन्होंने ऐसे ही बांट लिए। उन्हें चार भागों में बांटकर वे यह देखने के लिए कि सिलाई रहित उसके उस चोगे को कौन जीतता है, चिट्ठियां डालीं।

क्रूस पर केवल मृत्यु दण्ड देने के लिए ही नहीं, बल्कि अपमान और लज्जित करने के लिए भी चढ़ाया जाता था। सामान्यतया यह काम सार्वजनिक स्थान में किया जाता था जहां से बहुत से लोग गुज़रते हों और वे उस घृणित दृश्य को देख सके। क्रूस पर चढ़ाने का रोमियों का उद्देश्य मरने वाले व्यक्ति का अपमान करना और जिस भी कारण या अपराध के कारण उसे दण्ड दिया जा रहा होता, उसकी निंदा करना होता था। रोमी नागरिकों को क्रूस पर नहीं चढ़ाया जाता था; मृत्यु दण्ड देने का यह ढंग केवल दासों, विदेशियों और छोटे दर्जे के लोगों के लिए ही था। आम तौर पर उन्हें नंगे ही क्रूस पर चढ़ाया जाता था, और उनकी लाशों को कई सप्ताह तक गलने के लिए क्रूस पर ही रहने दिया जाता था, जिससे यह दृश्य और भी घृणास्पद और घिनौना लगता था। यह लिखकर सिपाहियों ने यीशु के कपड़े बांट लिए थे, कि यूहन्ना हमें क्रूस पर होने वाले उस लज्जाजनक अपमान अर्थात ऐसे अपमान का स्मरण करा रहा था जो यीशु ने हम सबके लिए सहा!

अपने वृत्तांत को यूहन्ना उन स्त्रियों की ओर ध्यान दिलाने के लिए मोड़ देता है जो क्रूस के पास खड़ी थीं। उनमें एक तो यीशु की माता मरियम थी। अपने पुत्र को ऐसी मौत मरते देखने पर एक मां के मन की पीड़ा की कल्पना करना बहुत मुश्किल है। पर, अपने दुख में भी यीशु अपनी मां की आवश्यकताओं को जानकर उन्हें पूरा करना नहीं भूला। क्योंकि यूसुफ तो स्पष्ट है कि पहले ही मर गया था और यीशु जानता था कि उसके चले जाने के बाद मरियम के लिए अपने आपको सम्भालना कठिन होगा। क्रूस के पास यीशु ने ''उस चेले को

जिससे वह प्रेम रखता था'' (निश्चित रूप से वह यूहन्ना था) खड़े देखकर अपनी माता से कहा; ''हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है'' (19:26)। फिर उसने यूहन्ना से कहा, ''यह तेरी माता है'' (19:27)। दोनों जानते थे कि वह क्या कहना चाहता था; यूहन्ना ने मरियम को अपनी मां की तरह सम्भालना था, और उसी दिन मरियम यूहन्ना के साथ रहने के लिए उसके घर चली गई।

मरियम और यूहन्ना को कहे गए यीशु के शब्दों में भी उसके प्रेम की सामर्थ और शुद्धता का पता चलता है। पीड़ा या दुख में हम केवल अपने बारे में ही सोचते हैं। पीड़ा होने पर, किसी भी दूसरे का विचार करना कठिन होता है। यह तथ्य इस बात को और भी महत्व देता है कि यीशु क्रूस पर मरते हुए भी मां के प्रति अपनी जिम्मेदारी को नहीं भूला।

इन घटनाओं के बाद, क्रूस की कहानी शीघ्र ही समाप्त हो जाती है। यीशु को पता था कि उसका काम पूरा हो चुका है। तब उसने कहा, ''मैं प्यासा हूं'' (19:28), और किसी ने उसे स्पंज से कुछ सिरका दिया। एक बार फिर, जैसा कि हमने सुसमाचार की इस पुस्तक में कई बार देखा है, यीशु के मनुष्य होने पर ज़ोर दिया गया। वह जानता था कि भूखा होने, थकावट (4:6) और मन में दुखी होने का क्या अर्थ है (11:33)। यीशु हमारे मनुष्य होने को पूरी तरह समझता है, और उसने अपनी मृत्यु से थोड़ी देर पहले ''मैं प्यासा हूं'' कहकर इस बात को दिखा भी दिया।

तब यीशु ने क्रूस पर से अपने अन्तिम शब्द कहे: ''पूरा हुआ है!'' (19:30)। इसी के साथ, ''सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए।'' उसने एक योजना के अनुसार अपना जीवन बिताया था, और अंत में उसने उस योजना को पूरा किया। उसकी मृत्यु कोई दुर्घटना नहीं थी, और न ही उसका प्राण किसी ने उससे छीना था। उसने हमारे पापों की क्षमा के लिए परमेश्वर की योजना के अनुसार अपना प्राण दिया।

क्रूस निर्णय लेने के लिए पुकार के रूप में

क्रूस पर यीशु की मृत्यु की कहानी का हमसे क्या लेना देना? क्या हमें इस कहानी को सुनकर दुखी होना चाहिए? क्या हमें आनन्द करना चाहिए? क्या हमें कुछ और करना चाहिए?

यूहन्ना द्वारा लिखी सुसमाचार की पूरी पुस्तक में, हमें उन कहानियों में आने के लिए कहा जाता है जिन्हें लोग देखते, सुनते, और यीशु से घुल मिल जाते हैं। ये घटनाएं केवल उनकी ही नहीं, *हमारी* भी कहानियां हैं। सुसमाचार की यह पुस्तक यीशु में *उनके* विश्वास के बारे में ही नहीं, बल्कि हमारे *विश्वास* के बारे में भी बताती है। यूहन्ना ने यह बात यीशु की मृत्यु के अपने वृत्तांत के तुरन्त बाद हमें याद कराई: ''जिस ने यह देखा, उसी ने गवाही दी है, और उसकी गवाही सच्ची है; और वह जानता है, कि सच कहता है कि तुम भी विश्वास करो'' (19:35)। पुनः, हमें ''विश्वास'' का प्रश्न मिलता है। यूहन्ना ने हमें दबाव में आकर झुकने वालों के उदाहरण के रूप में पतरस और पीलातुस की बातें बताई हैं। इसके

विपरीत उसने यीशु की मृत्यु के तुरन्त बाद उसमें दृढ़ता से अपने विश्वास का अंगीकार करने वालों के दो उदहारण भी दिए हैं।

अरमितिया का यूसुफ यीशु का एक गुप्त चेला था क्योंकि वह यहूदी अगुओं से डरता था। जब यीशु की मृत्यु हुई, तो यूसुफ ने पीलातुस के पास जाकर उसकी लाश मांगी ताकि वह उसे गाड़ सके। निश्चय ही यीशु के अनुयायी के रूप में पहचाने जाने का भय रखने वाले किसी व्यक्ति का यह ''गुप्त'' कार्य नहीं था![1]

यीशु की देह को दफ़नाने के निडर कार्य में यूसुफ के साथ निकुदेमुस के अलावा ''जो पहिले यीशु के पास रात को गया था'' (19:39) कोई और नहीं था। उसे हमने अध्याय 3 में देखा था, जहां यीशु ने उसे नये जन्म के बारे में बताया था। 7:50-52 में हमने उसे दोबारा देखा, जब वह अपने विश्वास के बारे में ''सार्वजनिक'' नहीं हुआ था। पर इसे हम मानवीय इतिहास के सबसे अंधकारमय समय अर्थात यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच के समय में देखते हैं। यहां साहसी, निर्णायक और निर्भीक विश्वास दिखाया गया है। यूसुफ और निकुदेमुस ने मिलकर यीशु की देह के गाड़ने की तैयारी की और उसे कब्र में रखा।

सारांश

यीशु की कहानी बताने का उद्देश्य मनोरंजन करना नहीं है। यह कहानी इसे सुनने वालों के मनों में जीवित अर्थात जीवन बदलने वाला विश्वास उत्पन्न करने के लिए बताई जाती है। क्रूस कोई ऐसी चीज़ नहीं है कि हम उसके बारे में सुनकर फिर भूल जाएं। यह हमारी प्रतिक्रिया मांगती है। यूहन्ना के प्रश्न से बचा नहीं जा सकता! क्या आप विश्वास में आकर उसके साथ अपनी पहचान बनाएंगे जो आपके लिए मर गया? यीशु आपके लिए ही तो मरा। आप इसका क्या करने वाले हैं?

पाद टिप्पणी

[1]मरकुस 15:43 संकेत देता है कि यूसुफ ने, जो एक धनी आदमी और यहूदी महासभा का सदस्य था, पीलातुस से यीशु की लाश मांगने का ''साहस जुटाया।''

यहूदियों के वार्षिक पर्व

लगभग रोमी माह

जनवरी	फरवरी/मार्च	अप्रैल	मई/जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर/अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
	(1) पूरीम का पर्व [2 दिन]	(2) फसह [1 दिन] और अखमीरी रोटी का पर्व [1 सप्ताह]	(3) पिन्तेकुस्त (या अठवारों या बटोरन का पर्व) [1 दिन]			(4) डेरों (या झोंपड़ियों या कटनी) का पर्व [1 सप्ताह] (5) तुरहियों का त्यौहार [1 दिन]		(6) समर्पण का पर्व (या दीपकों का पर्व) [8 दिन]

हर पर्व में क्या स्मरण किया जाता था: (1) रानी एस्तेर का यहूदियों को बचाना; (2) मिसर से इस्राएलियों का निकलना और मृत्यु का ऊपर से गुजर जाना; (3) सीनै पर्वत पर मूसा की व्यवस्था का दिया जाना; (4) जंगल में बिताया जीवन; (5) नव वर्ष का दिन; (6) मूर्तिपूजकों से मन्दिर का कब्जा छुड़ाने के बाद इसका पुन:समर्पण।

इन पर्वों में से तीन अर्थात फसह, डेरों के पर्व और समर्पण के पर्व यूहन्ना रचित सुसमाचार में मिलते हैं।